आकलन : कार्यक्षेत्र से टिप्पणियाँ

#æ'k ,l-



हर शैक्षणिक प्रयास विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों में सुधारों की ओर बढ़ने की अपेक्षा करता है। भारत में शिक्षा सुधार के कई प्रयास शिक्षक सामर्थ्य को विकसित करने पर, सीखने के लिए सहायक वातावरण बनाने पर या स्कूल और लोगों के बीच के फासले को पाटने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इनसे अपेक्षा की जाती है कि इनसे उभरी बातों से विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। आकलन किसी भी शिक्षा सुधार प्रयास का एक महत्त्वपूर्ण भाग होता है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों में आने वाले सुधारों को व्यवस्थित ढंग से समझा जाता है, और शिक्षकों या सहायकों को विद्यार्थियों के सामने आने वाली समस्याओं को समझने और सुधार की प्रक्रियाओं को तैयार करने में मदद मिलती है। इससे शिक्षकों और अधिकारियों को बेहतर ढंग से पढ़ाने के लिए की जाने वाली तैयारी को समझने में भी मदद मिलती है। अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन को ऐसे प्रयासों के प्रभावों का मूल्यांकन करने और सीखने को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्कूलों के लिए आकलन उपकरणों और प्रक्रियाओं की रचना करने और उन्हें क्रियान्वित करने का अनुभव रहा है।

लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम

लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम (एल.जी.पी.) कर्नाटक सरकार और अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन का संयुक्त प्रयास था। 2002 से 2005 के बीच यह उत्तरी कर्नाटक के ऐसे सात जिलों में लागू रहा जिनमें 9270 लोअर (निचली प्राथमिक कक्षाओं वाले) और हायर (ऊँची प्राथमिक कक्षाओं वाले) प्राथमिक स्कूल हैं। इनमें से 1887 स्कूलों ने तीन सालों के लिए इस प्रयोग में स्वेच्छा से भागीदारी की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य परीक्षा प्रणाली में सुधारों को बढ़ावा देना था – अर्थात रटने पर आधारित परम्परागत मूल्यांकन से योग्यता/ कौशल और समझ पर आधारित आकलन की ओर जाना। आकलन के मानदण्ड थे प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के नामांकन, उपस्थिति और सीखने की उपलब्धियाँ। वे स्कूल जो इन तीनों मानदण्डों में जरूरी प्रदर्शन स्तरों को छू पाए, उन्हें लर्निंग गारण्टी स्कूल (विजेता) माना गया। वर्ष 2003 में, 896 स्कूलों में से 40 स्कूलों को 'विजेता' घोषित किया गया; 2004 में, यानी प्रयोग के दूसरे वर्ष में, आकलित किए गए 1443 स्कूलों में से 84 स्कूलों ने 'विजेता' के रूप में योग्यता प्राप्त की और 2005 में, यानी प्रयोग के अन्तिम वर्ष में, आकलित किए गए 1887 स्कूलों में से 144 स्कूलों को 'विजेता' घोषित किया गया।

इस कार्यक्रम के प्रमुख तत्व थे : स्कूल की स्वैच्छिक भागीदारी तथा समझ, कौशल और उपयोग पर आधारित उपकरणों व प्रक्रियाओं का इस्तेमाल करते हुए हर बच्चे का आकलन किया जाना। अपेक्षित योग्यताओं पर हर बच्चे के लिए फीडबैक दिया गया। इसके साथ ही आकलन का कार्य विशाल पैमाने पर, एक अभियान के रूप में किया गया जिसमें 1000 से भी ज्यादा प्रशिक्षित स्वयंसेवियों ने पूरे उत्तर-पूर्वी कर्नाटक में एक साथ काम किया।

फाउण्डेशन के एक चार-सदस्यीय दल ने आकलन का संचालन किया जिसमें भाषा और गणित में कक्षा 1 से कक्षा 4 तक लिखित और मौखिक दोनों प्रकार की परीक्षाएँ हुईं। शिक्षकों को इसका विस्तृत फीडबैक दिया गया। फीडबैक इस मान्यता के साथ प्रदान किया गया कि शिक्षक बच्चों के साथ उनकी सीखने की योग्यताओं को सुधारने तथा चीजों को समझने पर और पढ़ी हुई बातों के उपयोग पर जोर देने के लिए काम करेंगे।

लेकिन दिलचस्प बात है कि ऐसा नहीं हुआ। पूछताछ करने पर पता चला कि शिक्षकों को विस्तृत फीडबैक

उपयोगी तो लगा पर उन्हें यह समझ में नहीं आया कि उसका इस्तेमाल कैसे करना था। वे कौशल और समझ पर आधारित शिक्षण को अपनी कार्यपद्धति में शामिल करने के लिए प्रशिक्षण चाहते थे। हमने शिक्षकों से अपेक्षा की थी कि वे प्रशिक्षण के बगैर इस तरह के शिक्षा सुधार प्रयास का एक प्रतिरूप तैयार करेंगे।

इस कार्यक्रम से मिली अन्तर्दृष्टियाँ

कर्नाटक के इतिहास में यह पहली बार था जब 1800 स्कूलों से कक्षा 1 से 4 के प्रत्येक बच्चे के सीखने के नतीजों से जुड़े आँकड़ों को उपलब्ध कराया गया था। हम 1000 से ज्यादा स्वयंसेवियों की मदद से सात जिलों में फैले सभी 1800 स्कूलों का तीन महीने के भीतर आकलन करने में सफल रहे थे।

- शिक्षक विद्यार्थियों के लिए समझ पर आधारित कक्षा प्रक्रियाओं को तैयार करने में मदद चाहते थे। यह कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था।
- परीक्षा प्रणाली को सुधारना तब तक कठिन है जब तक वह समझ-आधारित परीक्षाओं को स्वीकार और आत्मसात नहीं करती। हम सिर्फ सरकार को राज्य भर में इस तरह के आकलनों को संचालित करने के लिए प्रेरित कर सके। हम समझ/कौशल पर आधारित स्कूल स्तरीय आकलनों को बढ़ावा देने में विफल रहे।
- तीन सालों में हमारे प्रयास ने हमें समझ-आधारित आकलन पर एक दृष्टिकोण तो दिया है पर इससे कक्षा की प्रक्रियाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
- हम सन्दर्भ-आधारित आकलन उपकरण विकसित करने में असफल रहे क्योंकि विद्यार्थियों की संख्या और कार्यक्षेत्र का विस्तार, दोनों ही मानकीकरण के हिसाब से बहुत ज्यादा थे।
- याददाश्त-आधारित परीक्षाओं से समझ-आधारित परीक्षाओं पर जाने के लिए पृष्ठभूमि में बहुत अधिक कार्य करने की, दृष्टिकोण निर्मित करने की और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
- किसी भी बड़े पैमाने के आकलन में पारदर्शिता और सटीकता को बनाए रखना बहुत बड़ी चुनौती होती है।
- जब बहुत कुछ दाँव पर लगा हो तो असंगतियों की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं।
- आकलन से क्रियान्वयन तक, यह बदलाव एक बड़ी छलाँग है। यह उस वक्त बहुत मुश्किल होता है जब इसमें कई पक्ष शामिल हों और कई बदलते रहने वाले पहलू हों।

बेल्लारी, कर्नाटक में 'हायर - ऑर्डर थिंकिंग' का आकलन

यह हायर ऑर्डर थिंकिंग (एच.ओ.टी.एस.-उच्चतर ढंग की सोच) पर अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन और डी.आई.ई.टी. बेल्लारी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया एक लघु शिक्षा सुधार प्रयास और प्रायोगिक अध्ययन था। इसका लक्ष्य था रटकर सीखने के ढंग के आकलन से हटकर बच्चों में आवश्यक और सृजनात्मक क्षमताओं के परीक्षण की ओर जाना। इस अध्ययन का एक भाग शिक्षकों के विषय ज्ञान और रवैये का आकलन करना भी था।

हायर ऑर्डर थिंकिंग में विद्यार्थियों के लिए जरूरी होता है कि वे जानकारी और विचारों में ऐसे तरीकों से हेरफेर करें जो उनके अर्थ और निहितार्थों को बदल दें। यह बदलाव तब होता है जब विद्यार्थी तथ्यों और विचारों को जोड़ते हैं ताकि वे समन्वयन, सामान्यीकरण, व्याख्या, परिकल्पना कर सकें या किसी निष्कर्ष या अर्थ पर पहुँच सकें और इससे उन्हें प्रश्नों को हल करने का और नए अर्थों और नई समझ (उनके लिए) से परिचित होने का मौका मिलता है। जब विद्यार्थी ज्ञान के निर्माण में भागीदारी करते हैं, तो शिक्षण प्रक्रिया में अनिश्चितता का तत्व शामिल हो जाता है, और जिसके कारण हमेशा ही शैक्षणिक परिणामों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इस प्रॉजेक्ट का एक और उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों, विद्यार्थियों को विषयवस्तु के ज्ञान और उनके दृष्टिकोण के बीच के सम्बन्ध को देखना था।

फाउण्डेशन के दल ने कक्षा 3 व 4 में भाषा और गणित में ऊँचे स्तर के कौशलों का आकलन करने के लिए प्रत्येक स्कूल में दो दिन व्यतीत किए। शिक्षकों की विषयवस्तु की समझ और अध्यापन पद्धति के साथ-साथ

उनकी प्रवृत्तियों से जुड़ी बातों का भी आकलन किया गया। इस अध्ययन के विश्लेषण से पता चलता है कि जब विद्यार्थी चीजों को अपने सन्दर्भ से जोड़ने में और अपने अनुभवों को बाँटने में सफल रहे तब उन्होंने उच्च स्तर के कौशलों में अच्छा प्रदर्शन किया। उच्च स्तर के कौशलों में ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रदर्शन शहरी (छोटे कस्बों) के विद्यार्थियों से थोड़ा बेहतर रहा। लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम में भागीदारी करने वाले स्कूलों और इस कार्यक्रम में भागीदारी नहीं करने वाले स्कूलों के विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों में कोई खास अन्तर नहीं था, जबकि इन दोनों श्रेणियों के स्कूलों के शिक्षकों का ज्ञान एक-सा ही था। शिक्षकों की प्रवृत्तियों और विद्यार्थियों के प्रदर्शन के बीच के कुछ सम्बन्ध इस प्रकार हैं :

- शिक्षक सोचते थे कि विद्यार्थी को बहुत सारे सवाल नहीं पूछना चाहिए।
- वे सोचते थे कि अनुभवी शिक्षकों को अपनी विद्या को बाँटने की जरूरत नहीं होती तथा यह कि वे (शिक्षक) अनुशासनात्मक समस्याओं से निपटने में विफल थे।
- यह भी लगा कि शिक्षक पारम्परिक अध्यापन विधियों को ही पकड़कर रखना चाहते थे और बच्चों के बारे में तथा उनके सीखने के बारे में शिक्षकों का एक 'बँधा-बँधाया' नजरिया था।
- दोनों श्रेणियों के स्कूलों (वे जो लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम का हिस्सा थे और वे जो नहीं थे) ने निष्पक्षता को लेकर कोई सकारात्मक समझ या आस्था होने का प्रदर्शन नहीं किया।

इस अध्ययन से यह दिलचस्प अन्तर्दृष्टि सामने आई कि विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों तथा शिक्षकों के अपने पेशे, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया, लोगों व बच्चों के प्रति और निष्पक्षता को लेकर जो रवैए होते हैं, उन दोनों पहलुओं में गहरा सम्बन्ध होता है। दरअसल विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों में शिक्षकों के ज्ञान का योगदान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं था। इस अध्ययन से यह बात भी सामने आई कि उन स्कूलों में भी, जो लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम के दौरान 'विजेता' थे, 'शिक्षकों के रवैए' की समस्याएँ मौजूद थीं।

चाइल्ड फ्रेन्ड्ली स्कूल इनीशियेटिव (सी.एफ.एस.आई. - बाल अनुकूल स्कूली पहल), शोरापुर

यह सामर्थ्य और जवाबदेही को सतत रूप से निर्मित करते हुए तथा सभी भागीदारों के साथ साझेदारी करते हुए निर्धारित स्कूलों में सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करने के लिए किया गया प्रयोग है। इस शिक्षा सुधार प्रयास को 2005 से ही यादगीर जिले के शोरापुर ब्लॉक के सभी 350 स्कूलों में अपनाया जा रहा है। यह सभी सम्बन्धित भागीदारों (शिक्षक, समाज के सदस्य, विद्यार्थी और शैक्षिक पदाधिकारी) को शामिल करने, और व्यापक क्षेत्रों (स्कूली परिवेश, कक्षा का वातावरण, अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया, शिक्षकों का पेशेवर विकास और लोगों की भागीदारी) को जोड़ने के सन्दर्भ में एक समग्रतावादी कार्यक्रम है। ऊपर उल्लिखित पाँच क्षेत्रों की नियमित निगरानी के लिए 214 संकेतकों का एक समूह निर्धारित किया गया था। सी.एफ.एस.आई. के शिक्षा सुधार प्रयास में विभिन्न तरह के आकलन शामिल हैं जैसे विद्यार्थी के सीखने के नतीजों के लिए आधार रेखा, मध्य रेखा और अन्त रेखा परीक्षा, स्कूल की सुधार योजनाओं की आधार रेखा और मध्य रेखा, कक्षा के भीतर होने वाले प्रयासों का आकलन, विद्यार्थी के सीखने के नतीजों और स्कूल के सुधार संकेतकों के बीच के सम्बन्ध को देखने के लिए भी आकलन।

इस प्रयोग में यह माना गया कि स्कूल के सुधार संकेतकों में सुधार होने से विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों में भी सुधार होगा। आधार रेखा स्कूल सुधार योजना संकेतकों और कक्षा 1 से 4 तक के विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों को 2005 में आँका गया था। पहले तीन सालों (2005 से 2008) में पूरा ध्यान और प्रयास इस बात पर था कि सारे स्कूल, स्कूल सुधार योजना के संकेतकों तक पहुँच सकें। सुधार को देखने के लिए और इन संकेतकों तथा विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों के बीच के सम्बन्ध को देखने के लिए 2008 में एक मध्य रेखा आकलन आयोजित किया गया था। इसके विश्लेषण से

कुछ अनपेक्षित नतीजे सामने आए। यद्यपि स्कूल के विकास में 23 प्रतिशत सुधार था, पर विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों में कोई सुधार नहीं हुआ था। और यह बात तब भी साबित हुई जब स्कूल ने स्कूल के विकास संकेतकों के अपने प्रदर्शन में 90 प्रतिशत का सुधार दिखाया।

इस मध्य रेखा आकलन के फलस्वरूप एक समीक्षा की गई, जिसे करने वाले दल को लगा कि इन संकेतकों में संशोधन करने की जरूरत थी। हमें ऐसे संकेतकों को सम्मिलित करने की जरूरत थी जो स्कूल के विकास में तथा शिक्षक के सामर्थ्य निर्माण और लोगों को अपने साथ जोड़ने के सन्दर्भ में किए जाने वाले ठोस प्रयासों में योगदान दे सकते। इससे फिर बहुत सारे नए प्रयासों के बारे में सोचने-समझने का मौका मिल गया जैसे, पेशेवर विकास के लिए शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र खोलना, 'बदलाव के प्रतिनिधियों' का प्रशिक्षण और शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से एक-दूसरे से मिलकर अपने अनुभवों को साझा करने के लिए सभाओं का आयोजन और फिर साथ मिलकर एक सूचनापत्र निकालना। बच्चों के सीखने के लिए मेलों, सामुदायिक जत्थों, ध्यान केन्द्रित करने वाली समूह चर्चाओं को भी सामुदायिक भागीदारी के अंश के रूप में शुरू किया गया।

अब तक इस कार्यक्रम का क्या असर रहा है इसका आकलन करने के लिए, फाउण्डेशन ने मार्च 2011 में नमूने के कुछ स्कूलों में कक्षा 3 और 4 के विद्यार्थियों के बीच सीखने के नतीजों का एक मध्य रेखा आकलन किया।

आधार रेखा और अन्त रेखा के आकलन निम्नलिखित ढंग से आयोजित किए गए :

- नमूने में बेतरतीब ढंग से 50 स्कूलों को चुना गया।
- नमूने के इन स्कूलों में कक्षा 3 व 4 के सभी विद्यार्थियों का आकलन गणित और पर्यावरण विज्ञान (ई.वी.एस.) में सीखने की उपलब्धियों की लिखित परीक्षाओं का इस्तेमाल करते हुए किया गया। दोनों परीक्षाएँ कन्नड़ भाषा में आयोजित की गईं।
- दोनों विषयों में एक समान परीक्षा उपकरणों का उपयोग किया गया।

अन्त रेखा आकलन के विश्लेषण में आधार रेखा और मध्य रेखा आकलन (2009 से 2011 तक) के बीच सीखने की उपलब्धि के स्तरों में 16.2 प्रतिशत (47 प्रतिशत से ज्यादा सुधार) का स्पष्ट और आँकड़ों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सुधार देखने को मिलता है। यदि हम पृथक रूप से इन विषयों के आँकड़ों का विश्लेषण करें तो हम गणित और ई.वी.एस., दोनों में ही इसी तरह की वृद्धि पाते हैं। लेकिन दिलचस्प बात है कि कक्षा 4 (7.3 प्रतिशत) के मुकाबले कक्षा 3 (23.5 प्रतिशत) में यह सुधार कहीं ज्यादा है। जब इन आँकड़ों को लिंग और सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों के आधार पर विश्लेषित किया जाता है तो पता चलता है कि सभी श्रेणियों के भीतर, आधार रेखा और मध्य रेखा के आकलनों के बीच अच्छा खासा सुधार हुआ है।

चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव प्रोग्राम की सतत और व्यापक आकलन नीति ने पाठयक्रम के सुधार के लिए महत्त्वपूर्ण आँकड़े मुहैया कराने में मदद की। इसके अलावा इससे कार्यक्रम से जुड़े दल को उसमें आगे सुधार करने की दिशा मिली और कार्यक्रम का क्या प्रभाव हुआ है उसे सार्थक तरीकों से देख पाने और व्यक्त करने में मदद मिली। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इससे कार्यक्रम और उससे मिली प्रमुख सीखों के बारे में ठोस आँकड़ों के साथ बाहरी दुनिया से बात करने का आत्मविश्वास भी इस दल में विकसित हुआ।

रुद्रेश यादगीर, *कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के जिला संस्थान का नेतृत्व करते हैं। उन्होंने गुलबर्गा विश्वविद्यालय से सोशल वर्क में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की है और पिछले नौ सालों से वे अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ काम कर रहे हैं। फाउण्डेशन के चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव कार्यक्रम की गतिविधियों की रचना और क्रियान्वयन का श्रेय उन्हें जाता है। साथ ही सरकार व लोगों के साथ सम्बन्धों को निभाने का दायित्व भी उनके पास है। उनसे* rudresh@azimpremjifoundation.org *पर सम्पर्क किया जा सकता है।*
अनुवाद *: भरत त्रिपाठी*